फरीदाबाद

मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 247 | 1/– | जनवरी 2009

आप–हम क्या–क्या करते हैं... (15)

अपने स्वयं की चर्चायें कम की जाती हैं। खुद की जो बातें की जाती हैं वो भी अकसर हाँकने-फाँकने वाली होती हैं, स्वयं को इक्कीस और अपने जैसों को उन्नीस दिखाने वाली होती हैं। या फिर, अपने बारे में हम उन बातों को करते हैं जो हमें जीवन में घटनायें लगती हैं – जब-तब हुई अथवा होने वाली बातें। अपने खुद के सामान्य दैनिक जीवन की चर्चायें बहुत-ही कम की जाती हैं। ऐसा क्यों है? ✱ सहज-सामान्य को ओझल करना और असामान्य को उभारना ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्थाओं के आधार-स्तम्भों में लगता है। घटनायें और घटनाओं की रचना सिर-माथों पर बैठों की जीवनक्रिया है। विगत में भाण्ड-भाट-चारण-कलाकार लोग प्रभुओं के माफिक रंग-रोगन से सामान्य को असामान्य प्रस्तुत करते थे। छुटपुट घटनाओं को महाघटनाओं में बदल कर अमर कृतियों के स्वप्न देखे जाते थे। आज घटना-उद्योग के इर्द-गिर्द विभिन्न कोटियों के विशेषज्ञों की कतारें लगी हैं। सिर-माथों वाले पिरामिडों के ताने-बाने का प्रभाव है और यह एक कारण है कि हम स्वयं के बारे में भी घटना-रूपी बातें करते हैं। ✱ बातों के सतही, छिछली होने का कारण ऊँच-नीच वाली समाज व्यवस्था में व्यक्ति की स्थिति गौण होना लगता है। वर्तमान समाज में व्यक्ति इस कदर गौण हो गई है कि व्यक्ति का होना अथवा नहीं होना बराबर जैसा लगने लगा है। खुद को तीसमारखाँ प्रस्तुत करने, दूसरे को उन्नीस दिखाने की महामारी का यह एक कारण लगता है। ✱ और, अपना सामान्य दैनिक जीवन हमें आमतौर पर इतना नीरस लगता है कि इसकी चर्चा स्वयं को ही अरुचिकर लगती है। सुनने वालों के लिये अकसर "नया कुछ" नहीं होता इन बातों में। ✱ हमें लगता है कि अपने-अपने सामान्य दैनिक जीवन को "अनदेखा करने की आदत" के पार जा कर हम देखना शुरू करेंगे तो बोझिल-उबाऊ-नीरस के दर्शन तो हमें होंगे ही, लेकिन यह ऊँच-नीच के स्तम्भों के रंग-रोगन को भी नोच देगा। तथा, अपने सामान्य दैनिक जीवन की चर्चा और अन्यों के सामान्य दैनिक जीवन की बातें सुनना सिर-माथों से बने स्तम्भों को डगमग कर देंगे। ✱ कपड़े बदलने के क्षणों में भी हमारे मन-मस्तिष्क में अकसर कितना-कुछ होता है! लेकिन यहाँ हम बहुत-ही खुरदरे ढँग से आरम्भ कर पा रहे हैं। मित्रों के सामान्य दैनिक जीवन की झलक जारी है।

49 वर्षीय ड्राइवर : सुबह 5½ बजे उठता हूँ। नहा-धो लेता हूँ 6½ तक। बेटी 7 बजे पढ़ाने जाती है। बेटा अहमदाबाद में पेशेवर पढ़ाई कर रहा है। पत्नी से बातें करता हूँ और 4½ बजे से उठी वह सो जाती हैं तो कोई किताब पढता हूँ। भाई लोग दो अखबार मँगाते हैं पर मैं उन्हें उठा कर भी नहीं देखता। अखबार देखने को मन नहीं करता क्योंकि उनमें बहुत बुरी-बुरी बातें होती हैं।

8 बजे साहब की गाड़ी साफ करने जाता हूँ। लौट कर नाश्ता कर 9½ तक तैयार हो जाता हूँ और साहब के फोन का इन्तजार करता हूँ। 9½ के बाद इन्तजार वाला तनाव ही रहता है।

सप्ताह में 3 दिन साहब दिल्ली में कार्यालय में रहते हैं और 3 दिन बाहर दौरों पर। कार्यालय जाना होता है तब 10½ तक चल देते हैं। वहाँ ड्राइवरों वाले कमरे में बैठता हूँ.....

माता-पिता की सगाई बन्नो फ्रन्टियर (पाकिस्तान) में हुई थी और विवाह यहाँ फरीदाबाद आ कर। पिताजी साझेदारी में आरा मशीन और वर्कशॉप चलाते थे – बहुत शराब पीते थे और माँ दुखी रहती थी। पर मुझे कोई कमी नहीं थी। घर में नीम व अमरूद के पेड़ और अँगूर की बेल थी। दादी बकरी और मुर्गियाँ पालती थी। खेलने के लिये जगह ही जगह थी...

1974 में पिताजी का काम-धन्धा ठप्प हो गया। भाईयों में मैं बड़ा था – 16½ वर्ष की आयु में मैं एक फैक्ट्री में लगा।

कार्यालय में रहते हैं तब साहब सामान्य तौर पर साँय 7 बजे फरीदाबाद लौट आते हैं। साहब वायुयान से दूर के दौरे पर जाते हैं तब सुबह 5-5½ बजे उन्हें हवाई अड्डे छोड़ने जाता हूँ और फिर उनके परिवार के पहले से तय कार्यक्रम निपटाता हूँ।

सड़क मार्ग से दौरे पर जाते हैं तब मुझे 12 घण्टे गाड़ी चलानी पड़ती है और उसी दिन लौटते हैं तब तो 15 घण्टे। गाड़ी चलाता हूँ तब दिमाग ड्राइविंग में होता है – सोचूँगा तो गड़बड़ हो जायेगी। दूसरों से बचने और बचाने में ही पूरा ध्यान रहता है। 2001 में फरीदाबाद से चण्डीगढ 4 घण्टे में पहुँच जाते थे। आज उससे अच्छी व बड़ी गाड़ी है, सड़कें चौड़ी व बढिया हैं, कई फ्लाई ओवर बन चुके हैं फिर भी 6 घण्टे लग जाते हैं क्योंकि यातायात बहुत ज्यादा हो गया है और बार-बार ब्रेक लगाने पड़ते हैं। राजमार्गों पर 120-150 किलो मीटर प्रति घण्टा की गति से चलते हैं – इस रफ्तार से नहीं चलायेंगे तो पीछे वाले हॉर्न देने लगते हैं, साइड करो या तेज चलाओ। कई एक्सीडेन्ट देख चुका हूँ। एक बार झटका लगता है। फिर थोड़ी देर बाद वही रफ्तार। साहब को जल्दी रहती है – मीटिंग फिक्स होती है।

बाहर साहब पाँच सितारा होटल में ठहरते हैं। एक रात के लिये एक कमरा 8 से 11 हजार रुपये में और यह नहीं मिलता तो 14 हजार का भी लेते हैं। मैं 150-200 रुपये वाला कमरा ढूँढता हूँ। लेकिन बड़ी दिक्कत तो तब होती है जब साहब चर्चाओं में होते हैं और ड्राइवर बाहर गाड़ी में इन्तजार करते हैं। साहब लोग बड़े चालाक होते हैं – कह देते हैं कि कीमती चीजें रखी हैं ताकि ड्राइवर गाड़ी छोड़ कर न जायें। इन बातों पर ड्राइवर आपस में हँस लेते हैं पर नौकरी करने की मजबूरी है। चित्त भी साहब की और पट भी साहब की। कभी-कभी इन्तजार में तीन-चार घण्टे अकेले गाड़ी में बैठना पड़ता है तब मन-मस्तिष्क में कई बातें आती हैं.....

1977 में मैं गेडोर हैण्ड टूल्स में स्थाई मजदूर बना और एक धार्मिक संस्था से जुड़ा। ड्युटी के बाद साँय 5 बजे घर से साइकिल पर साथियों के साथ निकल जाता और रात 10-11 बजे लौटता। गुरु ग्रन्थ पढते-पढाते और धार्मिक चर्चायें करते। अमृतसर से रोपड़ हो कर लौट रहा था जब 1984 के सिख-विरोधी दँगे आरम्भ हुये। पीपली बस अड्डे से वापस रोपड़ लौट गया और 17 दिन वहीं रहा। नौकरी के लिये पटना जा रहे छोटे भाई पर ट्रेन में हमला हुआ – सत्तर टाँके आये। यहाँ फरीदाबाद में पिताजी के ढाबे को आग लगा दी गई। दिल्ली के शाहदरा में तीन खास दोस्त मार दिये गये। दिल्ली के ही झिलमिल क्षेत्र में एक रिश्तेदार को जिन्दा जला दिया गया। फरीदाबाद से दिल्ली जा रहे एक मित्र के पिता को तुगलकाबाद स्टेशन पर जिन्दा जला दिया। मुम्बई से आ रहे 10 मित्रों में से दो को मथुरा स्टेशन पर मार दिया गया। दिल्ली गये एक रिश्तेदार को पकड़ कर केश काट दिये। फैक्ट्री में कुछ लोग कहते कि इस काली पगड़ी वाले को भट्ठी में झौंक दो। कट्टरता पहले से थी, कत्लेआम ने सरकार और हिन्दुओं के खिलाफ नफरत बढाने का काम किया। मैं धार्मिक संस्था में और सक्रिय हो गया। 1987 में मेरा विवाह हुआ। **(बाकी पेज चार पर)**

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

शाही एक्सपोर्ट मजदूर : " आई पी-1 सैक्टर-28 स्थित फैक्ट्री में स्टाफ समेत 4000 हैं जिनमें 2000 महिला मजदूर हैं। नवम्बर 08 में महिला मजदूरों का 70-80 घण्टे और पुरुष मजदूरों का 100-150 घण्टे ओवर टाइम। बोनस 15 प्रतिशत की बात पर 22 अक्टूबर 08 को भोजन अवकाश के बाद दिन में मजदूरों ने पूरी फैक्ट्री में काम बन्द कर दिया। कम्पनी ने फैक्ट्री में पुलिस बुला ली। पुलिस बोली काम करो तो कहा कि करेंगे पर बोनस 20 प्रतिशत दो। कम्पनी का मैनेजिंग डायरेक्टर तब चीन में था। बोनस 20 प्रतिशत दिया। बाद में इस मामले में 58 को नौकरी से निकाला। स्थाई मजदूरों को कम्पनी अधिकारी गाली देते हैं और इधर नवम्बर माह में एक ठेकेदार के जरिये फिनिशिंग विभाग में 100 मजदूर रखे हैं। ठेकेदार के जरिये रखे इन 50 महिला तथा 50 पुरुष मजदूरों को 8 घण्टे के मात्र 75 रुपये और इनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। 12/6 मथुरा रोड़ पर नई फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये 2000 मजदूर रखे हैं और उनकी 10-10 घण्टे की दो शिफ्ट हैं।"

केनमोर विकास श्रमिक : " 20/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में 20 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 600 से अधिक वरकर थे। कोई न कोई लाँछन लगा कर अप्रैल 08 से निकालने शुरू किये और अब दिसम्बर-अन्त में 135 मजदूर बचे हैं। चौबीस घण्टे चलने वाली फैक्ट्री में दिवाली से 8-8 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। छह मैनेजर, 10 इंजिनियर, 8 सुपरवाइजर-फोरमैन, 10 क्लर्क जबरन इस्तीफे के शिकार हुये। दो सुपरवाइजरों ने इस्तीफे से इनकार किया तो उनका गेट रोका। श्रम विभाग में शिकायत पर उन्हें वर्ष पर 32 दिन अनुसार हिसाब दिया। फैक्ट्री में कारों के एयर कन्डीशनरों और न्यू हौलैण्ड ट्रैक्टर के गियर बॉक्स का काम होता है। ***सेन्डेन विकास, प्रणव विकास, आर पी एस विकास, साटा विकास*** कम्पनी की परिजन हैं।"

ए बी बी कामगार : " 34 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित नामी फैक्ट्री में अधिकतर मजदूर 5 ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। चार ठेकेदारों के जरिये रखे हम 150 वरकरों को सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन भी नहीं देते। रोज 10-12 घण्टे ड्युटी पर महीने के हमें 3585 रुपये देते हैं। हम में से 40 को कम्पनी वर्दी नहीं देती। स्थाई मजदूरों तथा एक ठेकेदार के जरिये रखे वरकरों को कम्पनी चाय-नाश्ता व भोजन देती है पर हम 150 मजदूरों को यह नहीं देते।"

जिन्दल रैक्टीफायर वरकर : " 195 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में 14-15 वर्ष आयु के कई लड़के भी काम करते हैं। हैल्परों की तनखा 2500 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ऑपरेटरों की तनखा 3586 रुपये। फैक्ट्री में साहब लोग धमकी देते हैं, बदतमीजी करते हैं, गाली देते हैं।"

सीताराम डाइंग मजदूर : " 5 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। हैल्परों को 12 घण्टे के 90 रुपये और कारीगरों को 130 रुपये। फैक्ट्री में 100 मजदूर काम करते हैं – ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी की नहीं।"

लुमैक्स श्रमिक : "78 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में नवम्बर की तनखा 17 दिसम्बर को दी और बन्द करने की बातें हो रही हैं – कहते हैं आर्डर नहीं हैं। घाटा बता कर डी एल एफ वाली फैक्ट्री बन्द कर दी है और स्थाई मजदूरों को पुणे जाने की कह रहे हैं।"

वर्षा इन्टरप्राइजेज कामगार : " 579 सैक्टर-58 स्थित फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** के पुर्जों के निकल प्लेटिंग करते 15 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं है। हैल्परों की तनखा 2700 और ऑपरेटरों की 3000-4000 रुपये। सुबह 9 से रात 9 की शिफ्ट, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

क्लच ऑटो वरकर : " 12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में एक ठेकेदार के जरिये रखे हम 5 मजदूरों को अक्टूबर और नवम्बर की तनखायें आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी हैं। पैसे माँगने पर गाली व धमकी – तनखा 3000 रुपये ही, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।... बड़ी सँख्या में कैजुअल वरकर निकालने के बाद जो बचे हैं उन्हें नवम्बर की तनखा आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी है। स्थाई मजदूरों को नवम्बर का वेतन कल, 18 दिसम्बर को देना शुरू किया है।"

ट्रान्स कारपोरेशन मजदूर : "50/ए इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 15-16 वर्ष आयु के लड़कों को हैल्पर रखते हैं। हैल्परों की तनखा 2000-2400 और ऑपरेटरों की 3000-3300 रुपये। हर समय दबाव, धमकी, बहुत ज्यादा काम। पिटवा कर, डरा कर भगा देते हैं और किये काम के पैसे नहीं देते।"

सिफ्टर इन्टरनेशनल श्रमिक : " 83 सैक्टर-6 और 105 सैक्टर-25 स्थित कम्पनी की फैक्ट्रियों में मजदूरों को इधर से उधर भेजते रहते हैं। बदतमीजी करते हैं – गाली बहुत देते हैं, मारपीट भी करते हैं। हैल्परों की तनखा 2800 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।"

कन्डोर कामगार: "22 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2500 रुपये। अस्सी मजदूरों में से 60 की ई.एस.आई नहीं, पी.एफ. नहीं।"

अम्बिका प्लास्टो पैकेजिंग वरकर : " प्लॉट 12, 16/2 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200-2500 तथा ऑपरेटरों की 3000-3500 रुपये। अस्सी मजदूरों में 15 की ही ई.एस. आई. व पी.एफ. हैं। नवम्बर की तनखा आज 17 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

शुभ इन्डस्ट्रीयल कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "30 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में सुबह 8 से रात 8½ की शिफ्ट है और लगातार 36 घण्टे भी रोकते हैं। पावर प्रेस 13 हैं और इनके नट-बोल्ट, चाबी, पायदान का स्प्रिंग टूटने पर ठीक नहीं करवाते। इसलिये उँगली बहुत कटती हैं। हाथ कटने पर गाली देते हैं और कहते हैं कि जानबूझ कर काटते हो। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरते – प्रेस ऑपरेटरों में किसी की भी ई.एस.आई. नहीं। हाथ कटने पर एन एच 5 में डॉ. जैन क्लिनिक एण्ड नर्सिंग होम ले जाते हैं। कोई क्षतिपूर्ति नहीं। एक मजदूर के दोनों हाथ की तीन-तीन उँगली कटी तो ई.एस.आई. प्रावधानों के लिये उसे मुकदमा लड़ना पड़ा। फैक्ट्री में ***जे सी बी, मारुति सुजुकी*** आदि का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2000-2200 और प्रेस ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये। महीने में 200-225 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से।"

एवन ट्युब कैच श्रमिक : " 42 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री से 16 नवम्बर को 75 मजदूर निकाल दिये। नवम्बर की तनखा आज 18 दिसम्बर तक नहीं दी है। फण्ड की राशि निकालने का फार्म भरवाने जाते हैं तो मैनेजमेन्ट कहती है दो महीने बाद बतायेंगे।" ***जाह्नवी डाइंग कामगार :*** " हेमला के पीछे स्थित फैक्ट्री में हम 150 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3000 और ऑपरेटरों को 3600 रुपये। ई.एस. आई. व पी.एफ. 150 में 10 के भी नहीं हैं। अक्टूबर की तनखा 29 नवम्बर को दी थी और नवम्बर की आज 19 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3665 रुपये (8 घण्टे के 141 रुपये)

सुरक्षा कर्मी

गार्ड : "कोठी 419 सैक्टर-21 ए में कार्यालय वाली ***नैन मैनपावर सेक्युरिटी*** के गार्ड 12/2 सैक्टर-37, 29 डी.एल.एफ., 78 सैक्टर-6 स्थित लुमैक्स कम्पनी की फैक्ट्रियों पर हैं। हर महीने हमें तनखा देरी से देते हैं – नवम्बर का वेतन आज 20 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

गार्ड : "चावला कॉलोनी, बल्लभगढ में कार्यालय वाली ***स्विफ्ट सेक्युरिटी*** के 500 गार्ड राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 250 ***सिक्स टैन आउटलेटों*** पर तैनात हैं। हम से 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ड्युटी करवाते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर हमें 30 दिन के 4500 रुपये देते हैं। जबकि, सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन और ओवर टाइम अनुसार भी एक गार्ड के महीने में 9200 रुपये से अधिक बनते हैं। जो तनखा देते हैं वह भी हर महीने देरी से – नवम्बर का वेतन हमें आज 17 दिसम्बर तक नहीं दिया है।"

गार्ड: "सैक्टर-16 में डाकखाने के पास कार्यालय वाली ***सेन्टीनल सेक्युरिटी सर्विस*** करीब चालीस हजार गार्ड सप्लाई करती है। हम गार्ड 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। साप्ताहिक छुट्टी नहीं। प्रतिदिन 12 घण्टे पर 30 दिन के 4500 रुपये – ई.एस.आई. व पी.एफ. काट कर।" ■

दिल्ली में मजदूर

दिल्ली में सरकार द्वारा निधारित न्यूनतम वेतन : अकुशल श्रमिक (हैल्पर) 3683 रुपये (8 घण्टे के 142 रुपये)।

भगवती कन्स्ट्रक्शन एण्ड इंजिनियर्स मजदूर : "सी-18 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री से एक झटके में मजदूर निकालने के लिये कम्पनी हड़ताल करवाना चाहती थी पर हम मजदूरों ने हड़ताल होने नहीं दी। हम ने स्वयं को संगठित किया और किन्ही बिचौलियों की बजाय इस बात पर जोर दिया कि हम स्वयं बात करेंगे। फिर भी धीरे-धीरे कर मजदूर निकालने में कम्पनी सफल है – 150 के 60 कर दिये हैं। श्रम निरीक्षक आता है और पैसे ले कर चला जाता है। लोहे का काम है – फैक्ट्री में फायर बॉक्स बनते हैं। ***रेलवे*** और ***जय भारत मारुति*** का काम होता है। हैल्परों की तनखा 2200 रुपये और कारीगरों की 2700-4800 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले अब 9 मजदूर ही बचे हैं – 50 वरकरों की ई.एस. आई नहीं, पी.एफ. नहीं। एक शिफ्ट है सुबह 9 से रात 9½ की और अगले रोज सुबह 9 बजे तक रोक लेते हैं। महीने में 150 से 250 घण्टे ओवर टाइम के – भुगतान सिंगल रेट से। चाय-मट्ठी के लिये 4 रुपये देते हैं और रात 9½ बाद रोकते हैं तब 30 रुपये रोटी के लिये देते हैं।"

आर जी सी एक्सपोर्ट श्रमिक : "सी-63/4 ओखला फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से 45 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। सिलाई कारीगर और प्रेसमैन पीस रेट पर हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 2800 रुपये थी, नवम्बर माह से 3000 की है। ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2600 रुपये। कम्पनी ने 256 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव में आर जी सी इम्पैक्स नाम से नई फैक्ट्री शुरू कर दी है।"

लेदर टैक कामगार : "डी-43 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9 की शिफ्ट है और 10½ तक रोक लेते हैं। हैल्परों की तनखा 2400 रुपये और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। कारीगर पीस रेट पर – 8 घण्टे बाद रेट बदलता नहीं, वही रहता है। फैक्ट्री में चमड़े के जैकेट बनाते 80 मजदूरों में 40 की ही ई. एस.आई. व पी.एफ. हैं। तनखा हर महीने देरी से – अक्टूबर का वेतन 20 नवम्बर को दिया, नवम्बर की तनखा आज 13 दिसम्बर तक नहीं दी है।"

शाही एक्सपोर्ट वरकर : "एफ-88 ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 50 मजदूर कम्पनी ने स्वयं भर्ती किये हैं और 750 वरकर एक ठेकेदार के जरिये रखे हैं। ठेकेदार के जरिये रखे 750 मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में साप्ताहिक छुट्टी नहीं। दिल्ली सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देते – 26 दिन की बजाय 30 दिन काम पर न्यूनतम वाली राशि देते हैं। महीने में 70-80 घण्टे ओवर टाइम के जिन में से 50 घण्टे खा जाते हैं और 30 घण्टे का भुगतान दुगुनी दर की बजाय सिंगल रेट से करते हैं।"

गुड़गाँव में मजदूर

लोगवैल फोर्ज मजदूर : " 116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 10-15 वर्ष से बारहों महीने 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट थी पर इधर 20 नवम्बर से दिन की शिफ्ट 8 घण्टे की और रात की 10 घण्टे की कर दी है। रात के 2 घण्टे ओवर टाइम को शनिवार को छुट्टी के बदले में काट लेते हैं। लेकिन 20 नवम्बर तक के 54 घण्टे ओवर टाइम के पैसे 12 दिसम्बर को, फिर 15 को, और फिर 22 को देंगे कह कर आज 23 दिसम्बर को मैनेजमेन्ट ने कहा है कि इन पैसों की आशा छोड़ दो। कम्पनी 25 दिसम्बर से 1 जनवरी तक फैक्ट्री बन्द कर रही है।"

धीर इन्टरनेशनल श्रमिक : "299 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 500 मजदूरों में सिलाई कारीगर पीस रेट पर और हैल्परों की तनखा 2200 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूरों की सुबह 9 से अगले रोज सुबह 4 बजे तक ड्युटी। महीने में कोई छुट्टी नहीं। एक दिन छुट्टी करने पर दो दिन के पैसे काटते हैं। ओवर टाइम पर रुकने से मना करने पर गाली देते हैं, मार भी देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और इस हिसाब से भी हैल्पर के 2000 बने तो 1500 ही देते हैं, 500 रुपये खा जाते हैं।"

अलंकार क्रियेशन कामगार : "410 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में 1000 मजदूरों को जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं। इधर सीजन में रात को फैक्ट्री के ताला लगा देते हैं और मजदूरों को बाहर नहीं निकलने देते। लगातार 36 घण्टे काम करवाते हैं। गाली देते हैं और ओवर टाइम में से 25-30 घण्टे हर महीने जबरन काट लेते हैं।"

मोडलामा वरकर : " 105-106 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 150 सिलाई कारीगर तनखा पर थे जिनमें से 100 को आज, 23 दिसम्बर को हिसाब दे रहे हैं। कम्पनी ने 3000 लोग भर्ती किये हैं – टेलर, प्रेसमैन, सब पीस रेट पर। शिफ्ट सुबह 9-9½ से रात 8½-10 बजे तक। एक ठेकेदार के जरिये 200 मजदूर रखे हैं जिनकी ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और धागा काटती महिला मजदूरों की तनखा 2300-2400 रुपये। फैक्ट्री में ***गैप*** और ***ओल्ड नेवी*** का माल ज्यादा बनता है।

"मोडलामा की 200 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 4 ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूरों में सिलाई कारीगर पीस रेट पर और धागा काटने वालों की तनखा 2200-2300 रुपये। महीने में 100 घण्टे ओवर टाइम के जिनमें से 40 घण्टे ठेकेदार खा जाते हैं। और, नवम्बर की तनखा आज 23 दिसम्बर तक नहीं दी है। फैक्ट्री में गैप का माल ज्यादा बनता है, होम फिनिशिंग, रनर आदि का भी काम होता है। कम्पनी ने स्वयं 100 मजदूर रखे हैं जिनमें हैल्परों को जनवरी 08 से देय डी.ए. के 76 रुपये अक्टूबर की तनखा में जा कर दिये हैं, एरियर नहीं दिया है। जुलाई 08 से देय डी.ए. के 79 रुपये दिये ही नहीं हैं। कम्पनी ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से देती है। महीने में 100 घण्टे के ओवर टाइम में से 20-25 घण्टे खा जाते हैं और बोलने पर गाली देते हैं। फैक्ट्री में लैट्रीन गन्दी रहती हैं।"

चिन्टू फैशन मजदूर : " 295 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर सिलाई कारीगरों की तनखा से 150 रुपये ई.एस.आई. के ही काटते हैं। टेलरों की पी. एफ. नहीं है। फैक्ट्री को नरायणा, दिल्ली से यहाँ आये दो साल हो गये हैं पर मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। तम्बाकू पाये जाने पर मजदूर पर 500 रुपये जुर्माना लगाते हैं, गाली देते हैं, मारपीट करते हैं और गले में गत्ता टाँग कर घुमाते हैं।"

मोडर्न लेस हाउस कामगार : "231 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में धागा काटने वाले मजदूरों की तनखा 2500-2600 रुपये, ई.एस. आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

मैग फिल्टर वरकर : " 88 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में मोल्डिंग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और बाकी विभागों में 12 घण्टे की एक शिफ्ट थी तथा सप्ताह में 1-2 रोज पूरी रात भी रोक लेते। महीने में 110-120 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। फैक्ट्री में ***मारुति सुजुकी*** का काम होता है। लेकिन कल, 22 दिसम्बर से मोल्डिंग में दिन की शिफ्ट 8 घण्टे की कर दी है। हैल्परों की तनखा 3000 रुपये। मजदूरों के पीने का पानी गन्दा। लैट्रीन बहुत गन्दी।"

गौरव इन्टरनेशनल मजदूर : " 208 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9-9½ से रात 11¼-12¼ तक काम करवाते हैं। जबरन ओवर टाइम के लिये रोकते हैं – मना करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। प्रतिदिन के 2 घण्टे ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से और बाकी का सिंगल रेट से। रोटी के लिये पैसे नहीं देते, 15 घण्टे में एक कप चाय भी कम्पनी नहीं देती। मैनेजर बहुत गाली देता है।

"गौरव इन्टरनेशनल की 236 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9½ से रात 9 की शिफ्ट के बाद रात की 11½ घण्टे की शिफ्ट भी है जिसमें 500 मजदूर काम करते हैं। चार महीने पहले ओवर टाइम के पैसे दुगुनी दर से देते थे पर इधर 2 घण्टे प्रतिदिन के दुगुनी दर से और बाकी के सिंगल रेट से देते हैं। फैक्ट्री में ***गैप*** और ***डीलट*** का माल बनता है और इन्हें ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं। एक ठेकेदार के जरिये रखे 500 मजदूरों को तो पूरे ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। लैट्रीनों के दरवाजे-शीशे टूटे हैं और रात को इन में पानी भी नहीं होता। [illegible] को कम्पनी एक कप चाय भी नहीं देती।"

ऋचा एण्ड कम्पनी श्रमिक : " 193 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 10 की शिफ्ट है, रविवार को भी। कोई साप्ताहिक छुट्टी नहीं। एक दिन छुट्टी करने पर नौकरी से निकाल देते हैं। महीने में 150 घण्टे ओवर टाइम.... इनचार्ज लोग धक्का भी मार देते हैं।" ■

अपने आप से बातें

मैं जबरन सेवानिवृत रह गया हूँ
केवल एक व्यक्ति वाला संसार रह गया हूँ।
अपनों के अपने-अपने परिवार हो गये हैं
अपनी-अपनी रुचियों के घर-द्वार हो गये हैं।
मैं सब का प्रिय रहा, अब बन्द किताब रह गया हूँ
केवल एक व्यक्ति वाला संसार रह गया हूँ।
चुपके-चुपके मैं सब की खबर ले आता हूँ
आत्मा से उनके शुभ को मनाता हूँ।
मैं दिवाकर था, अब सागर की क्षार रह गया हूँ
केवल एक व्यक्ति वाला संसार रह गया हूँ।
आज हुआ बदरंग, न जाने कल कैसा होगा
व्यर्थ गया जीवन का सब कुछ रखा-रखाया।
मैं कल था फरीदाबाद, आज आजमगढ रह गया हूँ
केवल एक व्यक्ति वाला संसार रह गया हूँ।
मैं अपनों के बीच अपरिचित-सा रह लेता हूँ
कुशल-क्षेम पूछे कोई तो बढिया कह देता हूँ।
मैं अब अपने लिये केवल "एक कहानी" रह गया हूँ
केवल एक व्यक्ति वाला संसार रह गया हूँ।

— राजनरायण, आजमगढ

आप-हम क्या-क्या.... *(पेज एक का शेष)*

पत्नी और फिर बच्चों को भी मैंने सक्रिय किया। लेकिन 10 वर्ष पहले परिवर्तन आने आरम्भ हुये..... अब किसी से बदला लेने की बात मन में नहीं आती। किससे बदला लेंगे? बात पूरी व्यवस्था की है। भाँवें लाम्बे केश कर, भाँवें सिर मुँड़ाय -- यह महत्वपूर्ण नहीं है।

जहाँ नौकरी करता था उस फैक्ट्री में बहुत- कुछ होता रहा पर मैं उस तरफ ज्यादा ध्यान नहीं देता था। कम्पनी ने 1996 में तनखा देनी बन्द कर दी तब मैंने फैक्ट्री जाना छोड़ दिया। दो पैसे के लिये पत्नी के सहयोग से मैंने कई काम-धन्धों को आजमाया। दो जगह फ्रूट चाट की दुकान लगाई। घर पर मट्ठियाँ बना कर चाय की दुकानों पर सप्लाई की। किराना की दुकान की। रिक्शा पर ले जा कर सैक्टरों में चावल बेचे। घर पर ड्रिल मशीन लगा कर जॉब वर्क किया — 40 रुपये का काम हो जाता तब पत्नी और मैं नाश्ता करते.... बच्चे छोटे थे और हम ऐसे में संस्था को समय नहीं दे पा रहे थे। मुझे 1999 में संस्था में काम करने को कहा गया — 1000 रुपये संस्था की तरफ से और 1000 रुपये एक पदाधिकारी की वर्कशॉप सम्भालने के लिये। वहीं ड्राइवरी सीख मैं संस्था के स्कूल की गाड़ी चलाने लगा। ड्राइवरी के संग- संग मैं संस्था के लिये सहायता राशि एकत्र करता। मैं सोचता था कि मैं सेवा भी करता हूँ पर हर कोई मुझे नौकर समझने लगा। सब काम मुझे देने लगे — 24 घण्टे की नौकरी। मैं अपने परिवार को भी समय नहीं दे पा रहा था। इसलिये 2001 में मैं एक कम्पनी के साहब का ड्राइवर लगा।

मैं मजदूर हूँ। यह बात समझ में आई। धार्मिक संस्था से दूरी बढने लगी। अब भी बार- बार बुलाते हैं पर मैं दूरी बनाये हूँ। अब पिंजरे में नहीं रहूँगा। अब मैंने आकाश देख लिया है....

साहब दिल्ली में कार्यालय में होते हैं तो रात 7½ घर पहुँच जाता हूँ। बेटी के साथ, पत्नी के साथ बाजार जाता हूँ।

सैर से लौटता हूँ तब थका हुआ हूँ। आराम करता हूँ। कहीं नहीं जाता। रिश्तेदारी में जाना पड़ता है। यारी-दोस्ती लम्बी-चौड़ी नहीं है पर दुख-सुख में जाना पड़ता है। सिर्फ पेशेवर रह जाना गलत है क्योंकि इससे आपस में प्यार, हँसी, मस्ती खत्म हो जाती हैं। जो पेशेवर हो गये वो वहीं हँसेंगे जहाँ पैसे मिलेंगे।

रात 9 बजे भोजन के बाद थोड़ी देर टी.वी. और फिर रात 11 बजे सोना। रविवार को अन्य दिनों से पहले उठ कर जल्दी तैयार हो जाता हूँ। नाश्ता स्वयं बनाता हूँ। भोजन के लिये सब्जी खुद बनाता हूँ। बनाना और खाना-खिलाना मुझे पसन्द है। (जारी) ■

विरोध के स्वर

बोनी पोलीमर्स मजदूर : "प्लॉट 37 पी सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 365 में 360 दिन काम होता था। मुख्य विभाग, मोल्डिंग में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट और अन्य विभागों में 12 घण्टे की एक शिफ्ट जिसे खींच कर 36 घण्टे कर देते। महीने में 150-200 घण्टे ओवर टाइम सामान्य और इससे अधिक अजूबा नहीं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, मात्र 12 रुपये 13 पैसे प्रति घण्टा। फैक्ट्री में ***हीरो होण्डा, यामाहा, मारुति सुजुकी, जे सी बी, टाटा मोटर, डेल्फी, स्वराज माजदा, मुंजाल शोवा*** तथा ***इटली*** निर्यात के लिये रबड़ के पुर्जे बनते हैं। फैक्ट्री में 4 स्थाई मजदूर, 100 कैजुअल वरकर, ठेकेदारों के जरिये रखे 400 मजदूर तथा 125 स्टाफ के लोग काम करते थे। उत्पादन के लिये बहुत ज्यादा दबाव — भोजन अवकाश अकसर देरी से। फैक्ट्री में जगह-जगह कैमरे। मोल्डिंग में 150-200 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान और चार मशीनों पर मात्र एक पँखा। पाँच सौ मजदूरों के लिये 5 लैट्रीन। पीने का पानी खारा। खाँसी सामान्य, फोस्फेटिंग-सैण्ड ब्लास्टिंग तो बीमारियों के घर। हाथ का जलना व कुचला जाना, उँगली कटना सामान्य और ऐसे में आम बात है मजदूर से माफीनामा लिखवाना। कागजों में फैक्ट्री दुर्घटना-मुक्त.... बिजली के पैनल में आग लगी तब मैनेजिंग डायरेक्टर राज भाटिया ने फैक्ट्री में हवन करवाया था। लगातार काम करते कैजुअल वरकरों का कागजों में ब्रेक दिखा कर हर 6 महीने पर फण्ड राशि निकालने का फार्म भरना। दो ठेकेदारों के जरिये रखे 50 मजदूरों की तनखा 2500-3000 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। गालियाँ.....

"ऐसी बोनी पोलीमर्स ने नवम्बर 08 के आरम्भ से मजदूर निकालने शुरू किये। रोज 2-3 को निकाला। फिर सप्ताह में दो दिन, सोम-मंगल को फैक्ट्री बन्द करने लगे। डेढ सौ से ज्यादा पुरुष मजदूरों को निकालने के बाद मैनेजमेन्ट ने महिला वरकरों पर हाथ डाला। दो को 17 दिसम्बर को निकाला और 4 को कहा कि रविवार तुम्हारी ड्युटी का अन्तिम दिन है। पर फिर भी सोम-मंगल की 'छुट्टी' के बाद बुधवार, 24 दिसम्बर को एक महिला मजदूर ड्युटी के लिये फैक्ट्री पहुँची। अन्दर नहीं जाने दिया। भाई पहुँचा तो एक मैनेजर बोला कि मन्दी है, काम नहीं है, नहीं रख सकते, काम आयेगा तो बुला लेंगे।' लिख कर दीजिये कि निकाल नहीं रहे, काम आने पर बुला लेंगे' की कहने पर लिख कर देने से इनकार। भाई बच्चों को ले आया और सब फैक्ट्री के मुख्य द्वार पर धरने पर बैठ गये। मैनेजमेन्ट बौखला गई। भाई को धक्के दे कर अलग कर दिया पर महिला मजदूर बच्चों समेत धरने पर बैठी रही। ***मैनेजर:*** ' तुम्हारे बाप की फैक्ट्री है जो जबरन काम करोगी !' ***महिला मजदूर:*** ' हाँ, मेरी फैक्ट्री है! हमारे खून-पसीने से फैक्ट्री बनी है!!' भाई फोटो लेने लगा तो मैनेजमेन्ट के लोग मारने दौड़े और कैमरा छीनने की कोशिश की। भोजन अवकाश में मजदूर बाहर निकले। नारे लगे। मजदूर एकत्र हो गये। मैनेजमेन्ट वापस फैक्ट्री में। कम्पनी ने पुलिस बुला ली। ' हमारे इलाके में हँगामा नहीं होने देंगे' कह कर पुलिसवाले महिला मजदूर और उनके भाई को बातचीत के लिये फैक्ट्री में ले गये। मैनेजमेन्ट तब गाड़ी में श्रम विभाग ले गई। उप श्रमायुक्त और मैनेजर की मित्रता से कम्पनी की बात नहीं बनी। वापस फैक्ट्री — श्रम अधिकारी फैक्ट्री पहुँचा और महिला मजदूर से एक महीने की अतिरिक्त तनखा ले कर मामला रफादफा करने को कहा। महिला मजदूर इनकार कर घर लौटी। अगले रोज, 25 दिसम्बर को महिला मजदूर ने अपनी बातें गत्ते पर लिखी और अपने बच्चों, महिला सहयोगी व पुरुष सहयोगियों के साथ बोनी पोलीमर्स के मुख्य द्वार पर जा कर धरने पर बैठ गई। खूब चमक-दमक वाली फैक्ट्री की मैनेजमेन्ट बहुत ज्यादा बौखला गई। पुरुष सहयोगियों को खदेड़ा, बच्चों को धकेला पर महिलायें डटी रही। [illegible] लगा कर उन्हें ढकने के प्रयास हुये। गालियाँ और जेल की धमकियाँ। कम्पनी की दाल नहीं गली तो फिर पुलिस बुला ली। फिर श्रम विभाग। ' कम्पनी की नहीं बल्कि ठेकेदार की मजदूर है' की बातें। अन्ततः कम्पनी द्वारा 11 हजार रुपये अतिरिक्त देने पर महिला मजदूर के सहयोगियों ने सहमति दे दी। कम्पनी ने 29 दिसम्बर को श्रम विभाग में महिला मजदूर को 6 हजार रुपये नकद और 5 हजार का चेक दिया। श्रम विभाग और कम्पनी ने कागजी खानापूर्ति के लिये एक बिचौलिया खड़ा किया।" ■

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011